ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 27 | मार्च -II-2025 | अंक - 24 | माउण्ट आबू | Rs.-12

करेंगे भगवान का मिलकर कार्य...

-आलोक कुमार, अध्यक्ष विश्वहिंदू परिषद

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय में आये विश्व हिंदु परिषद के अध्यक्ष आलोक कुमार ने शान्तिवन, पाण्डव भवन आदि परिसर का भ्रमण किया और वहां के वायुमण्डल से वह प्रभावित हुए। विश्व हिंदु परिषद और ब्रह्माकुमारीज़ मिलकर भगवान शिव ने जो कार्य दिया है उसको आगे बढ़ाने के लिए सहयोग देने की बात भी कही।

आलोक कुमार ने संबोधित करते हुए कहा कि जो अनुभव शब्दों से अतीत हो, जो वर्णन अवर्णनीय हो उसको कैसे बताया जाए? कल सारा दिन यहां के अनेक तीर्थों के मैंने दर्शन किये। संस्था का विस्तार इतना है कि शरीर थक गया पर मन पुलकित ही रहा। पाण्डव भवन में बाबा की जो कुटिया है उसका पहले का रूप थोड़ा अलग था। तब एक छोटी कुटिया थी जो कि बहुत सामान्य थी। ब्रह्मा बाबा सिंध से आये और वहां विराजमान हुए। वहां बैठकर सबको पत्र भी लिखते थे।

कुटिया में बाबा की उपस्थिति न होते भी हुई अनुभूति

आपने कहा कि मैंने अपने मन में वह चित्र बिठाने की चेष्टा की मानो बाबा विराजमान है और हम उनके सामने दर्शन कर रहे हैं। उसके बाद एक ऊर्जा का अनुभव होने लगा। मन में शुभ भावों का उदय होने लगा। बाबा का शरीर नहीं है फिर भी वह सामने उपस्थित है ऐसा लगा। फिर जब समाधि(शान्ति स्तम्भ) पर गया तो एक डेन्स(सघन) स्पिरिचुअल एटमॉस्फेयर, एक लिगेसी पूरे विश्व के लिए अनुभव हुई। मैंने प्रदर्शनी की संहिता में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की आहुति के बारे में पढ़ा। इन सबका भस्म होना, पशुपने का निकल जाना, देवत्व का आगमन होना ज़रूरी है। संगमयुग पर प्रत्येक मानव की ये चेष्टा है कि हम मानव शुद्ध हों, पवित्र हों। और जैसा हमें बताया गया कि विरोध हो तो भी हम सभी को दुआएं देते रहें। सतयुग के लिए इसकी आवश्यकता है। मस्तिष्क में सर्व के प्रति शुभ भावना हो, सार्वभौम का विचार हो और शरीर उसी कार्य में व्यस्त हो।

यहां सबके भाव, बोल, चाल-चलन एकमुखी हैं, ऐसा परमात्म उपस्थिति से ही होता सम्भव

मैं अस्पताल देखने गया। जब भी मैं किसी को देखता था तो पूछता था कि आप कितने वर्ष से ज्ञान में हैं? तो किसी ने 25, किसी ने 30 वर्ष बताया। एक ने तो 33 वर्ष बताया। मैंने पूछा- इतने वर्ष हो गये कभी थकान नहीं लगी? तो उन्होंने बताया कि नहीं। दादी ने तो बताया कि एक दिन भी थकान जैसा कुछ नहीं लगा। कोई रिग्रेट भी नहीं कि मुझसे गलती हो गई। कभी विचार भी नहीं आया कि जीने का और भी कोई रास्ता हो सकता है। मेरे मन में आया कि ऐसा एकमुखी संकल्प केवल ईश्वर के विराजने से ही होता है। मैं विश्व हिंदू परिषद में काम करता हूँ। हम भी सब लोगों को कहते हैं कि भाई हिंदू हो ना? क्या इसलिए हिंदू हो कि माता-पिता हिंदू थे? हर एक का जवाब अलग-अलग होगा। पर यहाँ पर मैं जब देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि इस युग की क्रांतियों में से यह एक बड़ी क्रांति है। विश्व हिंदू परिषद की ओर से मैं आप सबका अभिनंदन करता हूँ। जिनका सौभाग्य है उनको ही परमात्मा यहां लेकर आया है। हम सबके लिए एक धन्यता का भी अनुभव करता हूँ कि हम सब सतयुग लाने के लिए पुरूषार्थी हो रहे हैं। भगवान निमित्त बनाए इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है! मैं पहली बार आया हूँ और मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं बार-बार आऊंगा। मैं विश्वास करता हूँ कि हम विश्वहिंदू परिषद और यहां कुछ संवाद करेंगे और एक-दूसरे के कामों को जानकर, जो भी कार्य भगवान ने तय किए हैं उनपर चलेंगे।

संगम के महाकुम्भ से ज्ञान-कुम्भ की ओर...

मानव मात्र से कलह-क्लेश मिटाने का लिया ब्रह्माकुमारीज़ ने संकल्प

-जगद्गुरू ओंकारानंद सरस्वती महाराज

प्रयागराज-उ.प्र.। स्वर्णिम भारत निर्माण में आध्यात्मिकता का योगदान विषय पर आयोजित इस संत सम्मेलन में अयोध्या से आए जगद्गुरू ओंकारानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था दुनिया में सुख-शान्ति की स्थापना के लिए समर्पित है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी विश्व की और सारे समाज की अनमोल धरोहर हैं। आज के इस कलह-क्लेश के समय सबके जीवन में शान्ति स्थापित करने का संकल्प इन ब्रह्माकुमारी बहनों ने लिया हुआ है, ऐसे धवल वस्त्रधारी ब्रह्माकुमारी बहनों को मैं दिल से नमन करता हूँ। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, मुख्यालय माउंट आबू ने सेक्टर 7 में आयोजित 'स्वर्णिम भारत ज्ञानकुम्भ मेले' में संत सम्मेलन में कहा कि सर्वशक्तिमान परमात्मा सर्वगुणों और शक्तियों का स्रोत हैं। जब हम राजयोग का अभ्यास करते हैं तो हमारी मन-बुद्धि साफ और स्वच्छ होती हैं। हम परमात्मा से जुड़ते हैं, जिससे उनके गुणों को स्वयं में अनुभव करते हैं। आचार्य बृजेशानंद महाराज ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा आध्यात्मिकता के क्षेत्र में किए गए कार्यों को जमकर सराहा। उन्होंने कहा कि अगर भारत में राम राज्य लाना चाहते हैं तो आध्यात्मिकता का मार्ग जीवन में अपनाना होगा।

परमात्म एकात्मवाद का पाठ सारे धर्मों का मूल

महंत प्रेमानंद महाराज, अद्वैत स्वामी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा जो एकात्मवाद का पाठ पढ़ाया, वह सारे धर्मों का मूल है और यही सनातन धर्म का बीज भी है। सर्व मांगल्य सनातन धर्म संस्थान के संस्थापक आचार्य योगी मनीष ने भी सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर मेले की संयोजिका और ब्रह्माकुमारीज़ के धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी ने सभी संतों का स्वागत किया और कहा कि प्रयाग की भूमि पुण्य सलिला मां गंगा का तट अनंत काल से त्याग, तपस्या की भूमि रहा है। ऐसे समय पर 144 साल के बाद यह सुखद महाकुम्भ निश्चित तौर पर भारत में सनातन धर्म के पुनरोत्थान का एक महत्वपूर्ण कारक बनेगा। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. राधा दीदी,लखनऊ ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का परिचय सभी उपस्थित महानुभावों को दिया। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गोपी दीदी, लंदन ने राजयोग मेडिटेशन कराकर सभी को गहन शान्ति की अनुभूति कराई। अंत में सभी संतों को ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा शॉल ओढ़ाकर व ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित किया गया। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. जागृति दीदी,वल्लभ विद्यानगर,गुजरात ने कुशलतापूर्वक मंच संचालन किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित व दिल्ली से आए चाँद बजाज के द्वारा परमात्मा शिव के मधुर गीतों से हुआ।

सभी संतों ने मेले में लगी प्रेरणादाई मनोरम झांकी का अवलोकन किया तथा स्वर्णिम दुनिया को दर्शाती चलित प्रदर्शनी की खुले ह्रदय से प्रशंसा की।

ब्रह्माकुमारीज़ जितना कोई कर न सका सनातन संस्कृति का प्रसार

श्री गिरधारी महाराज, महंत दिव्य शक्ति अखाड़ा ने कहा कि उन्हें बहनों का सुनना बहुत अच्छा लगता है। इनके निमंत्रण पर पहुंचना हमारा सौभाग्य होता है। सारे विश्व में ब्रह्माकुमारी बहनों की सेवा फैली हुई है और हमारा संत समाज भी फैला हुआ है लेकिन इन बहनों ने विश्व स्तर पर सनातन धर्म का जो प्रचार-प्रसार किया है, उतना कोई नहीं कर सका है। इसलिए इन ब्रह्माकुमारी बहनों का स्वागत हम जितना करें उतना कम है इन्होंने सनातन धर्म का जागरण बहुत किया है। कटनी मध्यप्रदेश से पधारे त्यागी महाराज ने कहा कि आप में दुनिया को बदलने का सामर्थ्य है यदि आप यहां आए हैं तो निश्चित रूप से आपकी ऊर्जा अद्भुत है।